Toppersnotes
Unleash the topper in you

UPTET

UTTAR PRADESH BASIC EDUCATION BOARD

उ.प्र. शिक्षक पात्रता परीक्षा

प्राथमिक स्तर

भाग–2(ब)

सामान्य हिन्दी एवं संस्कृत

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

हिन्दी

1. हिन्दी भाषा 1
2. हिन्दी साहित्य 2
3. वर्णमाला 11
4. विराम चिन्ह 18
5. शब्द भेद 19
6. संधि 28
7. समास 37
8. संज्ञा से अव्यय तक 42
9. अलंकार 52
10. रस 58
11. छन्द 63
12. पर्यायवाची शब्द 67
13. विलोम शब्द 69
14. अनेक शब्दो के लिए एक शब्द 71
15. वर्तनी 74
16. प्रमुख लेखक व उनकी रचनाएँ 76
17. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ 82
18. अवतरण के रचियता 84
19. हिन्दी **UPTET** प्रश्नपत्र–**2019** 96
20. हिन्दी **UPTET** प्रश्नपत्र–**2018** 102
21. हिन्दी **UPTET** प्रश्नपत्र–**2017** 107

- ❖ भाषा अधिगम एवं अर्जन 113
- ❖ भाषा कौशल 119
- ❖ शिक्षक सहायक सामग्री 123
- ❖ उपचारात्मक शिक्षण 124

संस्कृत

1.	वर्ण	125
2.	संधि	135
3.	सुबंत प्रकरण, तिङन्त प्रकरण	156
4.	वाक्य परिवर्तनम	175
5.	उपसर्ग	180
6.	प्रत्यय	182
7.	पर्यायवाची शब्द	187
8.	विलोम शब्द	189
9.	अव्यय प्रकरण	190
10.	समासः प्रकरण	193
11.	अपठित पंद्यांश	201
12.	अपठित गंद्यांश	204

Toppersnotes
Unleash the topper in you

हिन्दी भाषा (मुख्य तथ्य)

⇒ हिन्दी की आदि जननी संस्कृत है।

⇒ संस्कृत, पालि, प्राकृत भाषा से होती हुई अपभ्रंश तक पहुँचती है।

हिन्दी का विकास क्रम :

संस्कृत → पालि → प्राकृत → अपभ्रंश → अवहट्ट → प्राचीन हिन्दी

⇒ 'हिन्दी' शब्द मूलत: फारसी का है न कि हिन्दी भाषा का।

⇒ 'हिन्दी' शब्द के दो अर्थ हैं - 'हिन्द देश के निवासी' और हिन्द की भाषा

⇒ **प्रमुख रचनाकार** -

⇒ खड़ी बोली का प्रारम्भिक रूप सरहपा आदि सिद्धों, गोरखनाथ आदि नाथों, अमीर खुसरो जैसे सूफियों, जयदेव, नामदेव, रामानन्द आदि संतों की रचनाओं में उपलब्ध है।

⇒ **ब्रजभाषा के रचनाकार** - (सूरसागर) सूरदास, रसखान, मीराबाई आदि प्रमुख कृष्णभक्त कवियों ने ब्रजभाषा के साहित्यिक विकास में अमूल्य योगदान दिया है।

⇒ **अवधी** - कुतुबन (मृगावती), जायसी (पद्मावत), मंझन (मधुमालती), उसमान (चित्रावली)।

⇒ राजभाषा एक संवैधानिक शब्द है।

⇒ प्रत्येक वर्ष 14 Sep. को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

- संविधान में भाषा विषयक उपबंध भाग 17 (राजभाषा) के अनु॰ 343 से 351 तक एवं 8 वीं अनुसूची में दिए गए हैं।
- हिन्दी भाषा के मानकीकरण की दृष्टि से द्विवेदी युग सर्वाधिक महत्वपूर्ण युग था।

हिन्दी साहित्य (मुख्य तथ्य)

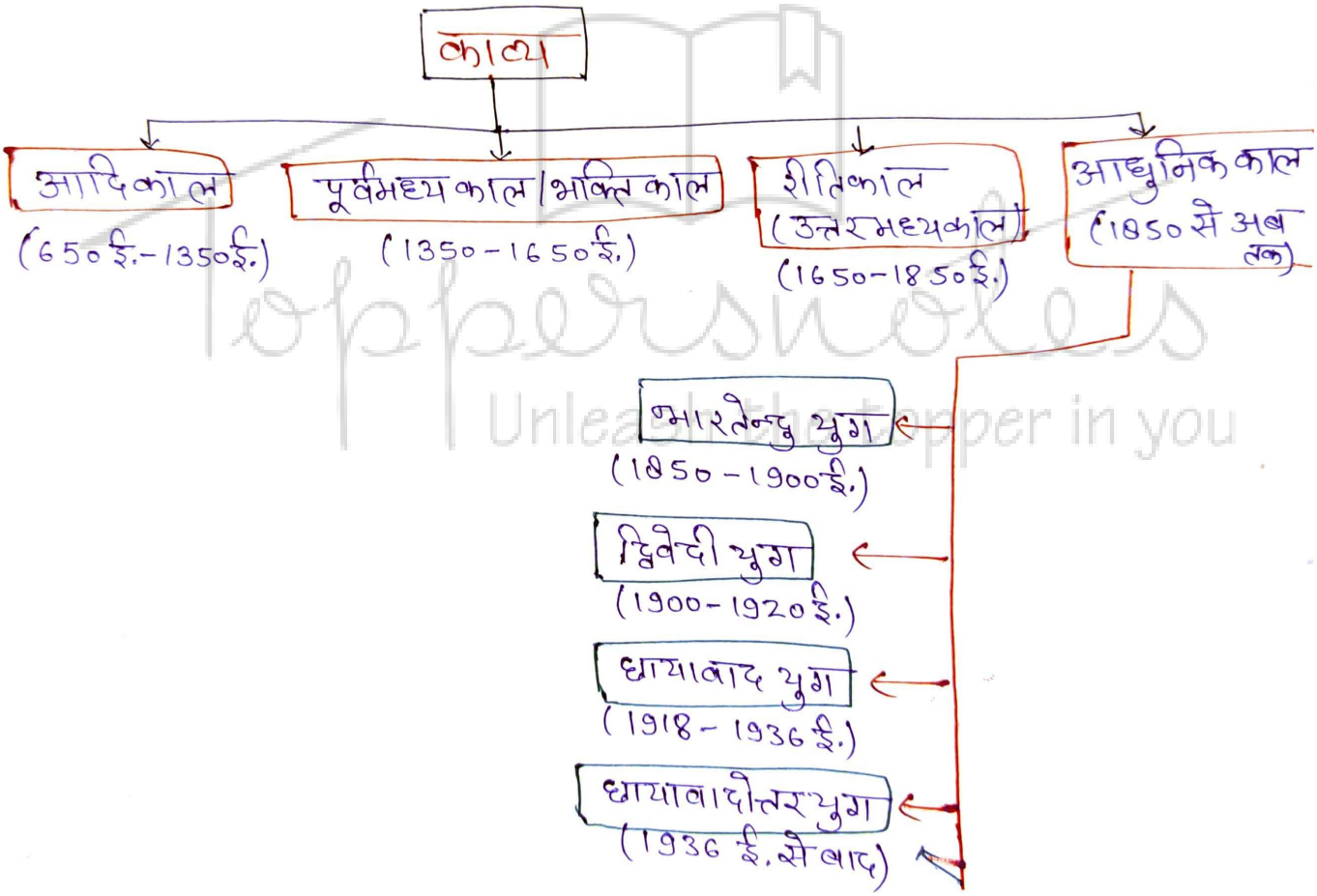

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(1) आदिकाल (650 ई. - 1350 ई.)

- हिन्दी साहित्य के विभिन्न कालों के नामकरण का प्रथम श्रेय जार्ज ग्रियर्सन को है।
- आदिकाल को ग्रियर्सन ने 'चारण काल', मिश्रबंधु ने 'प्रारंभिक काल', महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'बीजवपन काल', शुक्ल ने 'आदिकाल: वीरगाथाकाल', राकुल सांकृत्यायन ने 'सिद्ध-सामंत काल', राम कुमार वर्मा ने 'संधिकाल', हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'आदिकाल' की संज्ञा दी है।
- इस काल में 'आल्हा' छंद बहुत प्रचलित्त था। यह वीर रस का बड़ा ही लोकप्रिय छंद था।

⇒ आदिकालीन रचना व रचनाकार -

रचना		रचनाकार
1) शुभान रासो	—	दलपति विजय
2) बीसलदेव रासो	—	नरपति नाल्ह
3) हम्मीर रासो	—	शार्ङ्गधर
4) पृथ्वीराज रासो	—	चन्दबरदाई
5) कीर्तिलता	—	विद्यापति
6) पउमचरिउ	—	स्वयम्भू
7) मृगावती	—	कुतुबन
8) परमाल रासो	—	जगनिक

(2) पूर्व मध्यकाल / भक्तिकाल (1350 - 1650 ई.)

- भक्तिकाल को 'हिन्दी साहित्य का स्वर्णकाल' कहा जाता है।
- भक्ति काव्य की दो काव्यधाराएँ हैं -

(1) निर्गुण काव्यधारा (2) सगुण काव्यधारा

ज्ञानाश्रयी, प्रेमाश्रयी — कृष्णाश्रयी, रामाश्रयी

भक्तिकालीन रचना व रचनाकार

रचना	रचनाकार
1) साखी	कबीरदास
2) बीजक	कबीरदास
3) पद्मावत	मलिक मुहम्मद जायसी
4) अखरावट	"
5) आखिरी कलाम	"
6) सूरसागर	सूरदास
7) सूरसारावली	"
8) साहित्य लहरी	"
9) श्रीरामचरितमानस	गोस्वामी तुलसीदास
10) विनय पत्रिका	"
11) कवितावली	"
12) गीतावली	"
13) दोहावली	"
14) कृष्ण गीतावली	"
15) रामलला नहछू	"
16) पार्वती मंगल	"
17) जानकी मंगल	"
18) बरवै रामायण	"
19) मधुमालती	मंझन
20) मृगावती	कुतबन
21) रामचन्द्रिका	केशवदास
22) रामआरती	रामानंद
23) प्रेमवाटिका	रसखान
24) दानलीला	"
25) सुदामाचरित	नरोत्तमदास

Toppersnotes Unleash the topper in you

3. उत्तर मध्यकाल / रीतिकाल (1650-1850 ई.)

- इसे मिश्र बंधु ने 'अलंकृत काल', रामचन्द्र शुक्ल ने 'रीतिकाल', और विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने 'श्रृंगार काल' कहा है।

- रीतिकाल की दो मुख्य प्रवृत्तियाँ थी –

(1) रीति निरूपण (2) श्रृंगारिकता

⇒ रीतिकाल की रचना एवं रचनाकार –

	रचना	रचनाकार
1)	रामचन्द्रिका	केशवदास
2)	रसिक प्रिया	केशवदास
3)	नखशिख	"
4)	सतसई	बिहारी
5)	शिवराज भूषण	भूषण
6)	शिवा बावनी	"
7)	छत्रसाल दशक	"
8)	पिंगल	चिन्तामणि
9)	नरसीजी का मायरा	मीराबाई
10)	रागगोविन्द	"
11)	प्रेमवाटिका	रसखान
12)	गंगालहरी	पद्माकर

4. आधुनिक काल

(1) भारतेन्दु युग –

- भारतेन्दु युग का नाम भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी के नाम पर पड़ा।

भारतेन्दु युगीन रचना व रचनाकार—

रचना	रचनाकार
1) प्रेम-माधुरी	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
2) प्रेम सरोवर	"
3) प्रेम-तरंग	"
4) उर्दू का स्यापा	"
5) प्रेमाश्रु वर्णन	"
6) शृंगार विलास	प्रतापनारायण मिश्र
7) प्रेमपुष्पावली	"
8) मन की लहर	"
9) ऋतुसंहार (अ०)	जगमोहन सिंह
10) मेघदूत (अ०)	"

(2) द्विवेदी युग (1900 ई.–1920 ई.)

- इस कालखंड के पथ प्रदर्शक, विचारक और साहित्य नेता आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर इसका नाम द्विवेदी युग रखा गया है।
- द्विवेदी युग को 'जागरण सुधार काल' भी कहा जाता है।
- मैथिलीशरण गुप्त ने दो नारी प्रधान काव्य–'साकेत' व 'यशोधरा' की रचना की।

⇒ द्विवेदी युगीन रचना व रचनाकार–

रचना	रचनाकार
1) गंगावतरण	जगन्नाथदास 'रत्नाकर'
2) उद्धवशतक	"
3) गंगालहरी	"
4) शृंगारलहरी	"
5) हिंडोला	"
6) वैदेही वनवास	अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

7) प्रिय प्रवास — अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
8) चौरवे चौपदे — ''
9) रसिक रहस्य — ''
10) साकेत — मैथिलीशरण गुप्त
11) भारत भारती — ''
12) यशोधरा — ''
13) रंग में भंग — ''
14) जयद्रथ-वध — ''
15) पंचवटी — ''
16) शकुन्तला — ''
17) नहुष — ''

(3) छायावाद युग (1918-1936 ई.) —

- छायावाद को हिन्दी साहित्य में भक्ति काव्य के बाद स्थान दिया जाता है।

⇒ जयशंकर 'प्रसाद' जी की प्रथम काव्य कृति — उर्वशी (1909 ई.)
- प्रथम छायावाद काव्य कृति — झरना
अंतिम काव्य कृति — कामायनी (1937 ई.)
(सर्वाधिक प्रसिद्ध काव्य कृति)

- कामायनी के पात्र — मनु, श्रद्धा व इड़ा

⇒ छायावादी युगीन रचना व रचनाकार —

	रचना	रचनाकार
1)	कामायनी	जयशंकर प्रसाद
2)	आँसू	''
3)	लहर	''
4)	झरना	''
5)	उर्वशी	''
6)	अनामिका	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
7)	परिमल	''

8) गीतिका – सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
9) कुकुरमुत्ता – "
10) नये पत्ते – "
11) वीणा – सुमित्रानन्दन पन्त
12) पल्लव – "
13) गुंजन – "
14) युगान्त – "
15) लोकायतन – "
16) कला और बूढ़ा चाँद – "
17) चिदम्बरा – "
18) नीहार – महादेवी वर्मा
19) नीरजा – "
20) सान्ध्यगीत – "
21) दीपशिखा – "
22) यामा – "
23) रश्मि – "

(4) छायावादोत्तर युग (1936 ई० के बाद) – (प्रगतिवादी, प्रयोगवादी, नयी कविता)

=> रचना एवं रचनाकार

1) रेणुका – रामधारी सिंह 'दिनकर'
2) हुंकार – "
3) कुरुक्षेत्र – "
4) उर्वशी – "
5) हारे को हरिनाम – "
6) नीम के पत्ते – "
7) सीपी और शंख – "
8) आत्मा की आँखे – "

Toppersnotes Unleash the topper in you

9) हरी घास पर क्षण भर – सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

10) आँगन के पार द्वारा – " 'अज्ञेय'

11) कितनी नावों में कितनी बार – "

12) कनुप्रिया – धर्मवीर भारती

13) गाँधी पंचशती – भवानी प्रसाद मिश्र

14) चाँद का मुँह टेढ़ा है – गजानन माधव 'मुक्तिबोध'

15) भूरी-भूरी खाक धूल – " 'मुक्तिबोध'

16) ठण्डा लोहा – धर्मवीर भारती

17) अन्धा युग – "

18) पथिक – रामनरेश त्रिपाठी

19) ग्राम्यगीत – "

20) जलियाँवाला बाग – सुभद्रा कुमारी चौहान

21) झाँसी की रानी – "

22) मधुकलश – हरिवंशराय 'बच्चन'

23) मधुशाला – "

24) त्रिभंगिमा – "

25) चार खेमे चौंसठ खूँटे – "

26) सतरंगे पंखों वाली – नागार्जुन

27) प्यासी पथराई आँखें – "

28) तुमने कहा था – नागार्जुन

29) फूल नहीं रंग बोलते हैं – केदारनाथ अग्रवाल

30) पंख और पतवार – "

31) युग की गंगा – "

32) संसद से सड़क तक – सुदामा पाण्डेय 'धूमिल'

Toppersnotes
Unleash the topper in you

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हिन्दी साहित्यकार

रचना	साहित्यकार	वर्ष
1) चिदंबरा	पंत	1968 ई.
2) उर्वशी	'दिनकर'	1972 ई.
3) कितनी नावों में कितनी बार	'अज्ञेय'	1978 ई.
4) यामा	महादेवी वर्मा	1982 ई.

साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित हिन्दी साहित्यकार

रचना	साहित्यकार	वर्ष
हिमतरंगिनी (काव्य)	मावन लाल चतुर्वेदी	1955 ई.
कला और बूढ़ा चाँद (काव्य)	पंत	1960 ई.
कलम का सिपाही (जीवनी)	अमृतराय	1963 ई.
आँगन के पार द्वार (काव्य)	'अज्ञेय'	1964 ई.
मुक्तिबोध (उपन्यास)	जैनेन्द्र	1966 ई.
नीला चाँद (उपन्यास)	शिवप्रसाद सिंह	1990 ई.
जिंदगीनामा (उपन्यास)	कृष्णा सोबती	1980 ई.
दो चट्टानें (काव्य)	हरिवंशराय 'बच्चन'	1968 ई.
भूले-बिसरे चित्र (उपन्यास)	भगवतीचरण वर्मा	1961 ई.

Toppersnotes
Unleash the topper in you

Toppersnotes
Unleash the topper in you

वर्ण – प्रकरण

वर्ण – "वर्ण्यते अभिव्यज्यते वा लघुतमो ध्वनिः येन स वर्णः।"

"ध्वनि का वह लघुतम अंश, जो अखण्डित हो 'वर्ण' कहलाता है।"

जैसे – 'रामः' शब्द में र्, आ, म्, अ और स्(ः) – ये पाँच वर्ण हैं इन पाँचो वर्णों में से किसी का टुकड़ा नही हो सकता है। ये अखंडित हैं।

संस्कृत – वर्णमाला में निम्नलिखित वर्ण होते हैं –

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ ऋ ऌ ॠ ए ऐ ओ औ

क् ख् ग् घ् ङ्

च् छ् ज् झ् ञ्

ट् ठ् ड् ढ् ण्

त् थ् द् ध् न्

प् फ् ब् भ् म्

य् र् ल् व्

श् ष् स् ह्

अनुस्वार (ं)

विसर्ग (ः)

जिह्वामूलीय ᳵक

उपध्मानीय ᳶप

वर्णमाला ⇒

⇒ वर्णों के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं।

संस्कृत वर्णमाला में कुल 50 वर्ण हैं।

उपर्युक्त वर्णों को मूलतः दो वर्गों में विभक्त किया गया है।

① स्वर वर्ण (Vowels) ② व्यंजन वर्ण (Consonants)

स्वर वर्ण → "स्वयं राजन्ते इति स्वराः"।

अर्थात् जो वर्ण स्वयं उच्चरित हो 'स्वर वर्ण या अच्' कहलाते हैं इसके अन्तर्गत 'अ से औ' तक आते हैं इनकी सं० 13 होती है।

व्यंजन वर्ण → "व्यज्यते वर्णान्तर - संयोगेन द्योत्यते ध्वनिविशेषो येन तद् व्यंजनम्।"

अर्थात् जो वर्ण स्वयं उच्चरित न होकर स्वर की सहायता से हो 'व्यंजन वर्ण' या 'हल्' कहलाते हैं।

इसके अंतर्गत 33 वर्ण आते हैं — 'क् से ह् तक।

⇒ स्वर और व्यंजन वर्णों के अलावा 'अयोगवाह वर्णों का प्रयोग भी देखा जाता है इसके अन्तर्गत अनुस्वार, विसर्ग, जिह्वामूलीय और उपध्मानीय - ये चार वर्ण आते हैं। प्रत्याहार सूत्रों में इनका प्रयोग नहीं है।

स्वर वर्ण तीन प्रकार के होते हैं —

ⓐ ह्रस्व स्वर
ⓑ दीर्घ स्वर
ⓒ प्लुत स्वर

ह्रस्व स्वर में अ, इ, उ, ऋ एवं ऌ दीर्घ स्वर में आ, ई, ऊ, ॠ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ आते हैं। प्लुत स्वरों को लिखने के लिये किसी दीर्घ स्वर के आगे 3 (तीन संख्या का चिन्ह) लिख दिया जाता है।

जैसे - आ 3, ई 3, ओ 3, ॡ आदि।

→ उच्चारण काल को 'मात्रा' कहते हैं। इस आधार पर ह्रस्व एक, दीर्घ दो, प्लुत तीन, एवं व्यञ्जन वर्ण आधी मात्रा का होता है।

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ एवं ऌ को समान स्वर परन्तु ए, ऐ ओ एवं औ को 'संध्य स्वर' (Diphthongs) कहते हैं। उक्त चारों वर्ण संधि के कारण बने हैं।

अ/आ + इ/ई = ए
अ/आ + ए/ = ऐ
अ/आ + उ/ऊ = ओ
अ/आ + ओ = औ

Note - ए एवं 'ओ' गुण के कारण तथा 'ऐ' एवं 'औ' वृद्धि के कारण बने हैं। इसकी विस्तृत चर्चा संधि में होगी।

स्वरों के तीन अन्य प्रकार भी हैं।

ⓐ उदात्त = तालु आदि के ऊर्ध्व भाग में उच्चारित वर्ण।
ⓑ अनुदात्त = निम्न भाग से उच्चरित वर्ण
ⓒ स्वरित = मध्य भाग से उच्चरित वर्ण

व्यंजन वर्ण 5 वर्गों में विभक्त हैं और पाँचों 5-5 वर्ण आते हैं। जो वर्गीय या स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं।

ⓐ क वर्ग - 'क' से ङ
ⓑ च वर्ग - च से ञ
ⓒ ट वर्ग - ट से ण
ⓓ त वर्ग - त से न
ⓔ प वर्ग - प से म

Toppersnotes
Unleash the topper in you

उक्त वर्णों के उच्चारण में जिह्वा (जीभ) का अग्र, मध्य और पश्च भाग का स्पर्श होता है।

⇒ स्पर्श एवं ऊष्म वर्णों के बीच में अवस्थित होने के कारण य, र, ल, व् अन्तःस्थ व्यंजन कहलाते हैं। श्, ष्, स्, ह् को ऊष्म वर्ण कहते हैं क्योंकि इनके उच्चारण में मुँह से गर्म वायु निकलती है।

वर्णों के उच्चारण स्थान →

वर्णों के उच्चारण स्थान 7 हैं।

कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ्य, नासिका, और जिह्वा-मूल।

⇒ उच्चारण स्थान के आधार पर निम्नलिखित प्रकार के वर्ण होते हैं।

(a) कण्ठ्य वर्ण (अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः) → अ, आ, क वर्ग, ह और विसर्ग कण्ठ के उच्चारित होने के कारण 'कण्ठ्य वर्ण' कहलाते हैं।

(b) तालव्य वर्ण (इचुयशानां तालु) → इ, ई, च वर्ग, य और श तालु से उच्चरित होते हैं इसलिये ये तालव्य वर्ण हैं।

(c) मूर्धन्य वर्ण (ऋटुरषाणां मूर्धा) → ऋ, ॠ, ट वर्ग, र और ष-मूर्धन्य वर्ण हैं, क्योंकि इसका उच्चारण स्थान मूर्धा है।

(d) दन्त्य वर्ण (ऌतुलसानां दन्ताः) → ऌ, त वर्ग, ल और स - 'दन्त्य वर्ण' हैं क्योंकि इनका उच्चारण-स्थान दाँत है।

(e) ओष्ठ्य वर्ण (उपूपध्मानीयानामोष्ठौ) - उ, ऊ प वर्ग और उपध्मानीय वर्ण ओष्ठ से बोले जाने के कारण ओष्ठ्य वर्ण कहलाते हैं।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

नासिक्य वर्ण (अमङणनानां नासिका च। नासिकानुस्वारस्य) :
ङ, ञ, ण, न, म और अनुस्वार नाक से उच्चरित होने के कारण 'नासिक्य वर्ण' कहलाते है।

कण्ठतालव्य वर्ण – (एदैतोः कण्ठतालु ~~कण्ठोष्ठम्~~) → ए और 'ऐ' का उच्चारण कंठ और तालु दोनो से होने के कारण ये 'कण्ठ तालव्य वर्ण' है।

कण्ठोष्ठ्य वर्ण – (ओदौतोः कण्ठोष्ठम्) → ओ और औ का उच्चारण – स्थान कण्ठ एवं ओष्ठ दोनो है। इसलिये ये दोनो वर्ण 'कण्ठोष्ठ्य' है।

दन्तोष्ठ्य वर्ण – (वकारस्य दन्तोष्ठम्) – 'व' का उच्चारण-स्थान दाँत और ओष्ठ है।

जिव्हामुलीय वर्ण – (जिव्हामूलीयस्य जिव्हामूलम्) – जिव्हामुलीय का उच्चारण स्थान जिव्हामूल है।

वर्ण संयोजन एवं वियोजन ⇒
स्वरो के दो रूप होते है –
1. मूल रूप   2. मात्रा रूप
जब व्यंजन वर्ण से स्वर मिलते है तब उनके मात्रा रूप लिखे जाते है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

व्यंजन	स्वर	व्यंजन (स्वरयुक्त)	स्वर चिन्ह (मात्रा रूप)
क्	अ	क	×
क्	आ	का	ा
क्	इ	कि	ि
क्	ई	की	ी
क्	उ	कु	ु
क्	ऊ	कू	ू
क्	ऋ	कृ	ृ
क्	ॠ	कॄ	ॄ
क्	ए	के	े
क्	ऐ	कै	ै
क्	ओ	को	ो
क्	औ	कौ	ौ

Note- 'अ' एवं 'ऌ' का मात्रारूप नहीं होता है। 'अ' ज्यों-का-त्यों व्यंजन वर्णों में तिरोहित हो जाता है जबकि 'ऌ' स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होता है।

ध्वनियों को मिलाकर शब्द/पद बनाना ही 'वर्ण-संयोजन' कहलाता है तथा शब्द या पदों में प्रयुक्त वर्णों को अलग-२ दिखाना वर्ण-वियोजन है।

यथा	वर्णवियोजन	वर्ण संयोजन
	अ ह् आ	अहा
	त् आ न् इ	तानि
	प् अ श् य् आ म् इ	पश्यामि

Toppersnotes
Unleash the topper in you

⇒ वर्ण - वियोजन को ही 'वर्ण विन्यास' कहा जाता है वर्ण-संयोजन - या वियोजन के लिये निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिये

ⅰ) संयुक्त (सकल) होने वाले वर्ण के बाद स्वर नहीं रहता।

क् + ष् + अ = क्ष
त् + र् + अ = त्र
ज् + ञ् + अ = ज्ञ
द् + य् + अ = द्य
श् + र् + अ = श्र
प् + र् + अ = प्र
द् + ध् + अ = द्ध
द् + द् + अ = द्द
भ् + र + अ = भ्र

उपर्युक्त संयुक्ताक्षर इसी रूप में लिखे जाते हैं। अतएव वर्ण-विन्यास या संयोजन करते समय इन पर ध्यान देना अपेक्षित है।

प्रत्याहार " प्रत्याह्रियन्ते संक्षिप्यन्ते वर्णाः येनेति प्रत्याहारः।"

"जिस वर्ण से वर्ण-समुदाय संक्षिप्त कर दिये जाते हैं उस विधि का नाम 'प्रत्याहार' है।"

अधिक से अधिक या कुछ निश्चित वर्णों को उनके शुरू और अंतवाले केवल दो वर्णों के सहारे बता देने का नाम ही प्रत्याहार है। इसे वर्ण संक्षेप के नाम से भी जाना जाता है।

व्याकरण के सूत्रों को प्रत्याहार के सहारे ही व्यक्त किया जाता है।

जैसे- यदि हम संस्कृत में स्वरों को अच् कहते हैं।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

तो इसके अंतर्गत अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ऐ ओ और औ आदि वर्ण हैं। इसी तरह 'इक्' के अन्तर्गत इ, उ और ऋ वर्ण आते हैं।

इस प्रत्याहार-विधि का सर्वप्रथम प्रयोग भगवान शिव ने किया था- ऐसी मान्यता है परन्तु ऐसा कोई व्याकरण नहीं है। जिसे शिवप्रणीत माना जा सके। हाँ, 14 प्रत्याहार सूत्र अवश्य प्राप्त हैं, जिन्हें माहेश्वर-सूत्र या प्रत्याहार सूत्र के नाम से जाना जाता है। ये सूत्र निम्नलिखित हैं।

ⓐ अइउण् ⓔ हयवरट् ⓘ घढधष् ⓜ शषसर्
ⓑ ऋलृक् ⓕ लण् ⓙ जबगडदश् ⓝ हल्
ⓒ एओङ् ⓖ ञमङणनम् ⓚ खफछठथचटतव्
ⓓ ऐऔच् ⓗ झभञ् ⓛ कपय्

प्रत्याहार कैसे बनायें →

उदाहरण के लिये हम 'अक्' 'एच्' और 'हल्' लेते हैं।
'अ इ उ ण्' का प्रथम अक्षर 'अ और 'ऋलृक्' का क' — ये दोनों मिलकर 'अक्' बने। इसके अन्तर्गत अ, इ, उ, ऋ और लृ - ये 5 वर्ण आये।
इसी तरह से 'एओङ्' का 'ए' एवं 'ऐऔच्' का 'च्' मिलकर 'एच्' प्रत्याहार बना। 'एच्' के तहत ए, ओ, ऐ औ — ये चार वर्ण आए।
इसी प्रकार 'हल्' प्रत्याहार में क, प, श, ष, स और ह वर्ण आते हैं।

प्रत्याहार बनाने के लिये 14 सूत्रों में से प्रत्याहार के प्रथम वर्ण को ढूंढना चाहिये।

फिर उसी सूत्र में से प्रत्याहार के अन्तिम वर्ण को।
अब दोनों के बीच आने वाले तमाम वर्णों को लिखना चाहिये।
नीचे के उदाहरण से हम समझ सकते हैं —

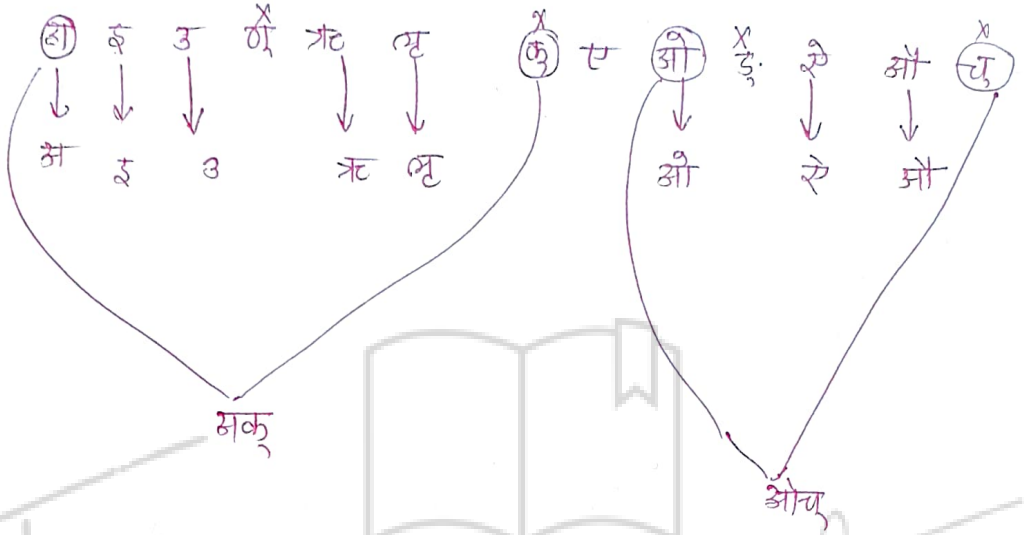

Note — प्रत्याहार के अंतर्गत आनेवाले वर्णों में हल् वर्ण की गणना नहीं की जाती है।

कुछ प्रमुख प्रत्याहार

अक् = अ इ उ ऋ ऌ

इक् = इ उ ऋ ऌ

एच् = ए ओ

अच् = अ इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ

एङ् = ए ओ

यर् = य र ल व ञ म ङ ण न झ भ

इसी तरह से अट्, अण्, जश्, झष् आदि प्रत्याहार बनेंगे।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

सँधि

"वर्णानां परस्परं विकृतिमत् संधानं सँधि।"

दो वर्णों में अति निकटता के कारण उनके मेल में जो विकार होता है उसे संधि कहते हैं।

जैसे – हिम + आलय:
↓ ↓
अ आ
↓
आ

हि + म् + अ + आ + लय:
↓
हि + मा + लय:
↓
हिमालय:

उपर्युक्त उदाहरण में 'म' में निहित स्वर 'अ' एवं 'आलय' का आद्य स्वर 'आ' – दोनों मिलकर आ बन जाये अर्थात इन दोनों में सँधि हुयी है।

→ किसी पूर्ववर्ती शब्द के अंतिम वर्ण के साथ परवर्ती शब्द का आदि वर्ण मिलता है तब, वहि: संधि कही जाती है।
किसी प्रतिपादिक अथवा धातु के अंतिम वर्ण के साथ विभक्तियों के आद्यक्षर का जब मेल होता है तब उसे 'अंत:' सन्धि कहते हैं।

→ धातु, प्रत्यय और प्रत्ययान्त शब्दों को छोड़कर सभी सार्थक शब्दों को 'प्रतिपादिक' कहते हैं।
जैसे – देव, राजा आदि

"अर्थवदधातुर प्रत्यय: प्रातिपदिकम्।"

→ वहिः सँधि तीन प्रकार की होती है।
1. स्वर (अच्) सन्धि 2. व्यंजन सँधि 3. विसर्ग: सन्धि

Toppersnotes
Unleash the topper in you

स्वर संधि (अच् संधि)

"स्वर वर्णों के साथ स्वर वर्ण के मेल से जो विकार हो उसे स्वर संधि कहते हैं।"

(स्वर वर्ण + स्वर वर्ण = विकार)

जैसे – महा + इन्द्रः = महेन्द्रः
आ + इ = ए

इस उदा० में आ + इ इन दो स्वरों का मेल हुआ है।

→ यह विकार आठ रूपों में दिखता है।

ⓐ दीर्घ ⓑ गुण ⓒ वृद्धि
ⓓ यण् ⓔ अयादि ⓕ पूर्वरूप
ⓖ पररूप ⓗ प्रकृतिभाव

इनके नियम एवं सूत्र इस प्रकार हैं —

1. अकः सवर्णे दीर्घः → दो परस्पर समान स्वर वाले चाहे ह्रस्व हो या दीर्घ, दोनों मिलकर दीर्घ हो जाते हैं।

जैसे –

अ/आ + अ/आ = आ

महा + आशयः = महाशयः (आ + आ) = आ
रत्न + आकरः = रत्नाकरः (अ + आ) = आ

इ/ई + इ/ई = ई

अति + इव = अतीव (इ + इ = ई)
मही + इन्द्रः = महीन्द्रः (ई + इ = ई)

Toppersnotes
Unleash the topper in you